राज
कॉमिक्स
विशेषांक
मूल्य 20.00 संख्या 206
नागद्वीप
नागराज
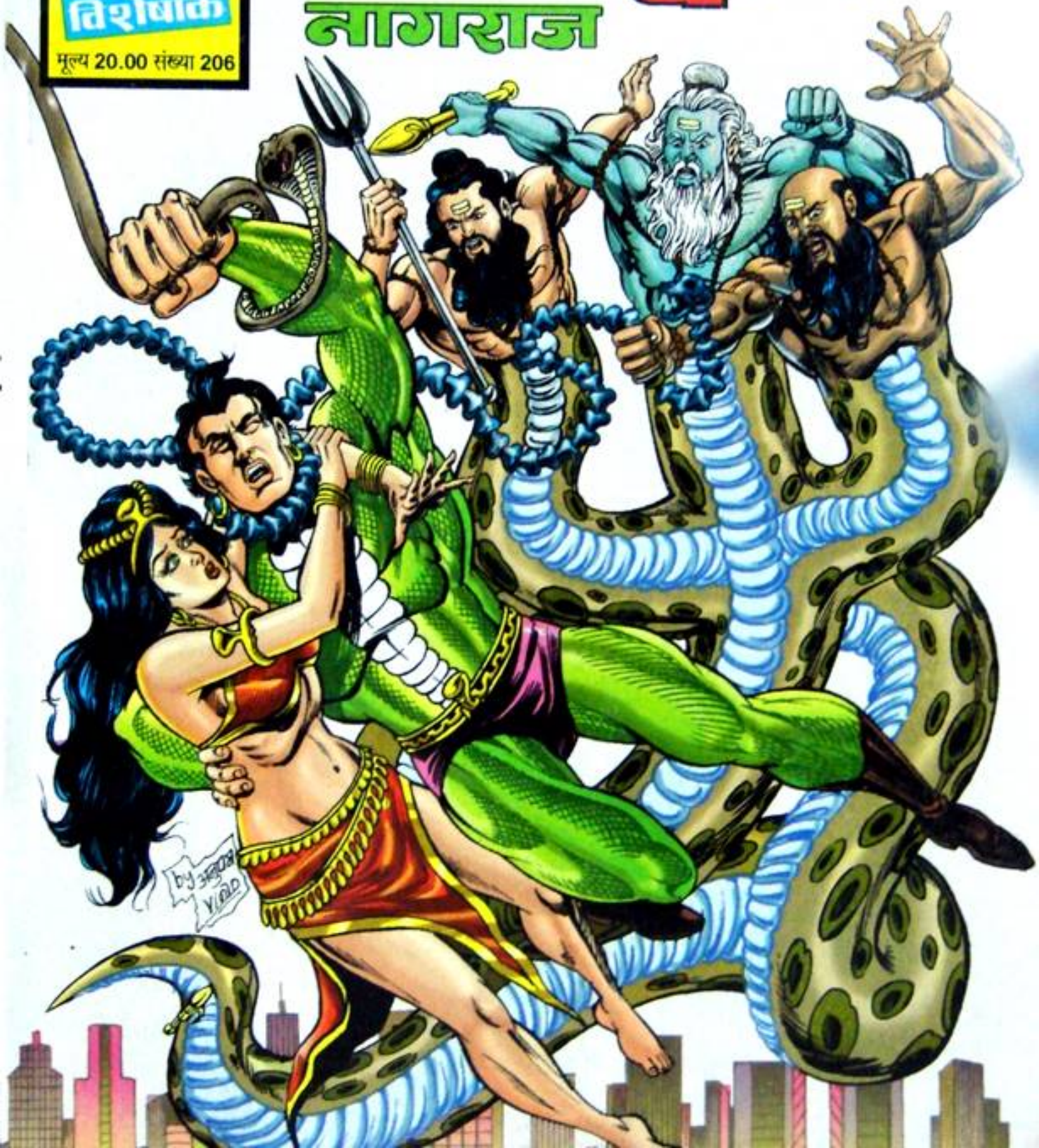
नागपाशा और उसके गुरुदेव, नागराज के खजाने की उन तीन मणियों को हथियाने निकल पड़े, जो मणियों के धारक को भूत, भविष्य और वर्तमान पर शासन करने की शक्ति देती थीं। नगीना भी यक्षराक्षस गरलगंट से तंत्र अंकुश प्राप्त करके और गरलगंट को ही अपना गुलाम बनाकर निकल पड़ी वही खजाना हासिल करने। नागराज को पहले नागपाशा के सेवक अग्निरूप से टकराना पड़ा और फिर यक्षराक्षस गरलगंट से। उधर गुरुदेव नागराज की वंश पांडुलिपि हासिल करने के प्रयास में असफल होकर, छलपूर्वक वेदाचार्य और भारती को अपनी प्रयोगशाला में ले गया। नगीना ने नागपाशा को अंकुश से गुलाम बनाकर खजाना हासिल कर लिया, और खजाने के साथ जा पहुंची नागद्वीप में महात्मा कालदूत के सामने। कालदूत भी नगीना की चाल का शिकार होकर अंकुश के दास बन गए! और इधर गरलगंट ने नागराज को एक ऐसे तड़ित गोले में फंसा दिया, जिसके अन्दर नागराज की समस्त शक्ति बेकार थी! अब गोले के साथ-साथ नागराज की जिन्दगी भी छोटी हो रही थी! और नगीना का गुलाम बनने वाला था पूरा...

यहां तक की कहानी आप पूर्व विशेषांक मृत्युदंड में पढ़ चुके हैं।

ओऽऽऽ मेरा पैर! इन 'तड़ित सलाखों' को छूते ही मेरा पैर जलने भी लगा, और मुझे एक तेज झटका भी लगा! लेकिन मैं बचने के लिए करूं भी तो क्या? मेरी कोई भी शक्ति इस 'तड़ित-पिंजरे' के अन्दर काम नहीं कर रही है!
ध्रुव कोई भी शक्ति अपने पास नहीं होने हुए भी ऐसी मुसीबतों से आराम से बच जाता है। अगर ध्रुव मेरी जगह होता तो वह क्या करता? मुझे ध्रुव की तरह सोचना होगा!

ये पिंजरा विद्युत तरंगों द्वारा बना है! लेकिन इसका निचला हिस्सा जमीन को नहीं छू रहा है! आखिर क्यों?

मतलब साफ है। अगर निचला हिस्सा जमीन के संपर्क में आ गया तो 'अर्थिंग' हो जाएगी, और सारी विद्युत तरंगें जमीन में समा जाएंगी! और 'अर्थिंग करने का सबसे अच्छा सामान है, धातु! जो मेरी बेल्ट में लगे सांप के रूप में मौजूद है!

मैं अगर इस 'धातुसर्प' के एक छोर को जमीन में धंसा दूं, और दूसरे छोर का इस विद्युत पिंजरे से स्पर्श करा दूं...
?

ग्रर्र र्र्ऽऽऽ
...तो विद्युत तरंगों का यह पिंजरा जमीन में समा जाएगा!
और मैं आजाद हो जाऊंगा!
अब मुझे गरलगंट को कोई और वार करने का मौका ही नहीं देना है! इसको मेरी विष फुंकार विचलित करती है! मैं तीव्र विष फुंकार के वार करके इसको संभलने ही नहीं दूंगा!...
...और फिर इसको इतना बेदम कर दूंगा कि जब मैं नगीना से निपटने सेंट्रल हॉल के अन्दर जाऊं, तो ये मेरा रास्ता न रोक पाए!
धड़ाक

नागराज ने गरलगंट को हराने के लिए वह रास्ता सोचा था, जिससे वह मामूली गुंडों को हराता था-
लेकिन गरलगंट पक्ष-राक्षस था! कोई मामूली गुंडा नहीं-
अब तू मेरी पकड़ से नहीं छूट सकता नागराज! मैं तुझको चूर-चूर करके भस्म कर डालूंगा!
राख का ढेर बन जाएगा तू!
इसके माथे में धंसा यह अंकुश! ऐसा ही अंकुश तो नगीना के हाथ में भी था! शायद इसी के कारण, गरलगंट नगीना का गुलाम बना हुआ है। इसको निकालने से शायद गरलगंट, गुलामी से मुक्त हो जाए!
ओऽऽऽफ! सारा शरीर जल रहा है! गरलगंट के हाथ गर्म होते जा रहे हैं! और मेरा शरीर उस गर्मी से झुलसता जा रहा है!...
...इसकी तंत्र शक्ति मेरी इच्छाधारी शक्ति को भी दबा रही है! क्या करूं!
लेकिन मैं अपनी सारी शक्ति लगाने के बाद भी इस अंकुश को बाहर खींच नहीं पा रहा हूं!
इस अंकुश का संपर्क गरलगंट के शरीर से काटना होगा! और यह काम मेरे सूक्ष्म सर्प कर सकते हैं!
वे अंकुश के चारों तरफ बनी दरारों से अंदर घुसकर अंकुश को ढक लें और अंकुश का संपर्क गरलगंट के शरीर से कट जाएगा!
अंकुश से गरलगंट के शरीर का संपर्क खत्म होते ही-

गरलगंट के होशो-हवास फिर से उसके काबू में आ गए-
आऽऽऽह! कितना मुक्त महसूस कर रहा हूं! धन्यवाद नागराज!
इस अंकुश को सिर्फ वही निकाल सकता है, जिसके शरीर में ये धंसा हो! और वह ऐसा कर नहीं सकता, क्योंकि वह तो खुद दास बना हुआ होता है!
तुमने अद्‌भुत बुद्धि का परिचय देकर मुझे इस अंकुश से आजाद किया है! मैं देव कालजयी के कारण तुमसे अपनी दुश्मनी भूल तो नहीं सकता लेकिन इस उपकार के बदले मैं तुमको एक वरदान अवश्य दूंगा...
...नगीना ने वह अंकुश खास तौर से तुम पर काबू पाने के लिए मांगा था!
मैं तुमको वरदान देता हूं कि अंकुश बाकी सभी पर असर करेगा, लेकिन तुम पर नहीं!
गरलगंट नाम की मुसीबत तो दूर हुई! अब देखूं कि नगीना अन्दर क्या कर रही है!

लेकिन अन्दर न तो नगीना थी, और न ही–

खज़ाना! खज़ाना कहां गया? यहां पर तो खाली स्टैंड्स के अलावा और कुछ भी नहीं है!

नागराज को इस बात का कतई अंदेशा नहीं था कि उसके मददगार पहले ही उससे दूर कर दिए गए हैं!

भारती! दादा वेदाचार्य! आप कहां हैं?
कोई जवाब नहीं! बड़ा अजीब सा सन्नाटा छाया हुआ है घर में!
शायद दोनों किसी काम से साथ-साथ बाहर गए हुए हों!

लेकिन दूसरे कमरे में कदम रखते ही-
अरे! यह क्या? क्या यहां पर कोई तूफान आया था! सारा कमरा उथल-पुथल हो गया है!
लड़ाई होने के चिन्ह साफ नजर आ रहे हैं!

यानी यहां पर कुछ अनहोनी घटी है। दादा वेदाचार्य और भारती अपने-आप कहीं नहीं गए, बल्कि उनको ले जाया गया है!...
लेकिन उनको ले कौन गया है? और कहां पर ले गया है? ओफ्! मेरी उम्मीद की सारी डोरें टूटती जा रही हैं। खजाना गायब हो गया और साथ ही मेरे मददगार भी गायब हो गए!
वह खजाना अब सरकार का है। उसको सरकार के पास वापस पहुंचाना मेरा फर्ज है। लेकिन मुझे तो यह भी नहीं पता कि खजाना है कहां पर?
इंतजार करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है! कोई नहीं!

खजाना कहां गया? यही सवाल केंदुकी के दिमाग में भी उभर रहा था-
नगीना गायब हो गई गुरुदेव! खजाना लेकर गायब हो गई! वह आखिर खजाना लेकर कहां गई होगी?
खजाने की फिक्र छोड़, और ये अंकुश निकालने में मेरी मदद कर कम्बख्त हिल भी नहीं रहा है! खजाने का तो मैं दुबारा भी पता लगा लूंगा!
इतनी शक्ति क्यों व्यर्थ कर रहे हैं गुरुदेव? अंकुश अगर नहीं खिंच रहा है तो नागपाशा जी के मस्तक का मांस काटकर उसे निकाल लीजिए।
इनका कटा हुआ टुकड़ा तो फिर से जुड़ जाएगा!
वाह केंदुकी! शाबाश! क्या रास्ता सुझाया है!
अंकुश शरीर से निकलते ही नागपाशा जैसे नींद से जाग उठा-
म... मैं यहां कैसे आ गया गुरुदेव?
हमने बुलवाया तुझे! वर्ना अपनी मूर्खता का परिचय देते हुए तूने तो अपने आपको नगीना का दास बना लिया था!
मैंने उसको मरा हुआ समझ लिया था गुरुदेव! लेकिन आप तो पांडुलिपि ले आए हैं न?
वो... मैं...(अम) पांडुलिपि तो नहीं ला पाया, लेकिन उन दिमागों को जरूर ले आया हूं, जिनमें पांडुलिपि की बातें बसी हुई हैं। जब मैं वहां पहुंचा तो मणियों का ही जिक्र चल रहा था। वे बगैर त्रिफना सर्प की मूर्ति के बेकार हैं। और वह मूर्ति किसी कालदूत के पास है!...

और इस बुड्ढे की बातों से मुझे ऐसा लगा कि यह कालदूत को जानता है। यह बताएगा हमें कालदूत का पता...
... वर्ना मरेगा तड़प-तड़प कर।
आssssss

बोटी-बोटी कर दे तो भी नहीं बताऊंगा, गुरुदेव! गद्दारों के खानदान से तू संबंध रखता होगा, वेदाचार्य नहीं!
बोटी-बोटी तो करूंगा! जरूर करूंगा! लेकिन तेरी नहीं! तेरी पोती की बोटियां करूंगा! और उसकी हर चीख के साथ तेरी स्वामिभक्ति का नशा उतरता जाएगा!
नागपाशा!

इशारा पाते ही नागपाशा के हाथ में एक कोड़ा चमक उठा और-
आऽऽऽ ह!
भारती!
चटाक
रुको, रुको, नागपाशा!

आऽऽऽह! इनको कुछ मत बताइएगा दादाजी! मेरी जान की खातिर अपनी जुबान मत खोलिएगा! आपसे ये जो कुछ भी जानेंगे, उसका प्रयोग नागराज की जान लेने के लिए अवश्य करेंगे!
मेरी जान का सौदा नागराज की जान से मत करिएगा! मत करिएगा दादाजी!
सड़ाक

नागराज की जान का सौदा? हांऽऽ! अच्छा रास्ता सुझाया तूने लड़की! तेरी जान का सौदा, नागराज की जान से नहीं हो सकता! लेकिन नागराज की जान का सौदा तो तेरे दादा की जुबान खुलवा सकता है न?
मैं नागराज को मारूंगा! तेरी आंखों के सामने मारूंगा! फिर तेरे दादा की जुबान कैंची की तरह चलेगी! खच, खच, खच, खच!
केंटुकी! रक्तबीज को बुलाओ!

नहीं, गुरुदेव! यह अनर्थ मत करो! रक्तबीज को मत बुलाओ!
बुलाना तो पड़ेगा ही वेदाचार्य! मैं जानता हूं कि रक्तबीज का प्रयोग मैं जीवन में सिर्फ एक बार ही कर सकता हूं। लेकिन इस वक्त रक्तबीज ही मेरा काम कर सकता है।
अगर तू नहीं चाहता कि मैं रक्तबीज को नागराज के पीछे भेजूं तो खोल दे जुबान!
बता दे मुझे कि कहां पर है कालदूत? जिसके पास है त्रिफना!

नहीं, दादाजी! इसके बहकावे में मत आइए! रक्तबीज हो या रक्त पेड़, नागराज उसे उखाड़ फेंकेगा।
नहीं, भारती! रक्तबीज को तुम उस शस्त्र के समान समझ लो जिसका वार मेघनाद ने लक्ष्मण पर किया था!
रक्तबीज का असर कभी खाली नहीं जाता! वह काम करके ही लौटता है!

इस बार वह नहीं लौटेगा दादाजी! गुरुदेव की गीदड़ भभकियों में मत आइए!
गीदड़ भभकी! मैं गीदड़ हूं! तो ले देख! मैं तेरे लिए खास 'सजीव दर्शन' का इंतजाम करता हूं। देख कि कैसे मरता है नागराज! वेदाचार्य का स्वामी!

जब अपनी जुबान खोलने का मन हो तो मुझे बता देना वेदाचार्य! रक्तबीज को मैं उसी समय रोक लूंगा!
जा, रक्तबीज! मिटा दे नागराज नाम के कीड़े को!
ये क्या कर रहे हैं गुरुदेव? अगर नागराज ने रक्तबीज को हरा दिया तो फिर ये जुबान कभी नहीं खोलेंगे!
रक्तबीज हार ही नहीं सकता, कैंडुकी! और अगर वह हार भी गया तो भी बाजी हम ही जीतेंगे तू बस देखता जा!

नागराज की वेदाचार्य और भारती से संपर्क करने की हर कोशिश बेकार साबित हो रही थी-

मैंने 'ध्यान योग' द्वारा भी दादा वेदाचार्य और भारती को ढूंढने की कोशिश कर ली! लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ!

ट्रिंगSSS ट्रिंगSSS

वे जहां पर भी हैं, शायद मेरी योग तरंगें वहां पहुंच नहीं पा रही हैं!

ओफ! ये टेलीफोन!

ध्यान भंग कर रहा है!

हैलो! राज... राज डियर!

राज, मैं निशा! मैडम कहां हैं? और तुम वहां पर क्या कर रहे हो?

म... मैडम ने कुछ काम से बुलाया था! लेकिन फिर किसी... अ... दूसरे जरूरी काम से बाहर चली गई हैं!

जरूरी काम तो मुझे भी है। मुझे एक कैमरा टीम चाहिए। किंग्सवे सर्कल जाने के लिए!

वहां पर एक भयानक दैत्य नागराज- नागराज चिल्लाता हुआ तोड़-फोड़ मचा रहा है! लेकिन नागराज न जाने कहां पर है?

त... तुम कैमरा टीम ले जाओ! मैं मैडम से कह दूंगा! ओ० के० बॉय!

ओफ! मेरे जासूस सर्पों ने मुझे मानसिक तरंगें जरूर भेजी होंगी! लेकिन मैं ध्यान योग में इतना गहरा डूबा हुआ था कि वे तरंगें मुझ तक पहुंची ही नहीं होंगी!

लेकिन ये हो क्या रहा है! महानगर में एक के बाद एक आफतें आखिर आ कहां से रही हैं?

अब तो नगीना या नागपाशा खजाना ले भी जा चुके हैं। अब कौन मेरे पीछे पड़ गया है?

रक्तबीज- नागराज!

सामने आ नागराज!

ले आ गया नागराज!

और यह भी जान ले कि नागराज ने सिर्फ इंसानी जानें न लेने की कसम खाई है। तेरे जैसे शैतान की जान न लेने की कसम नहीं खाई है!

मैंने भी एक कसम खाई हुई है नागराज! सदियों पहले जब मेरे लकड़दादा दैत्य रक्त-बीज का वध काली ने किया था तो मैंने रक्तबीज ने यह शपथ ली थी कि मैं किसी शत्रु की जान को बगैर लिए वापस नहीं जाऊंगा!
यही मेरा बदला है! और यही मेरा काम है!
घ
ड़ः
क
तू वापस तो जाएगा रक्तबीज! जरूर जाएगा! लेकिन वहां नहीं जहां से तू आया है!
बल्कि वहां, जहां तेरा लकड़दादा दैत्य रक्तबीज तेरा इंतजार कर रहा है। नर्क में!
रक्तबीज को नर्क जाने की जरूरत नहीं है! वह जहां पर जाता है एक नया नर्क बना देता है!
जैसे आज इस नगर को मैं नर्क बनाऊंगा ताकि तेरी आत्मा को कहीं और जाने की जरूरत न पड़े!
घ
ड़ड़ड़
प
आह!

आऽऽऽह! इसके सींग तो मुझे असहनीय पीड़ा पहुंचा रहे हैं! मैं इच्छाधारी कणों में बदलने के लिए अपना ध्यान तक केंद्रित नहीं कर पा रहा हूं!
देख अंधे! देख तड़पता हुआ नागराज! पर तू कैसे देखेगा! पर्दे पर आ रहे दृश्यों को तू देख नहीं सकता! बता लड़की! बता इसे कि नागराज कैसे तड़प रहा है?
क्या हो रहा है? बताओ भारती! क्या नागराज हार रहा है? बोलो भारती! बोलो!
र... रक्तबीज के सींग नागराज के शरीर में घुस गए हैं, दादाजी!
लेकिन नागराज बचेगा! जरूर बचेगा! उसके पास कई शक्तियां हैं। वह बचेगा दादाजी!
भारती को जो नागराज पर विश्वास था-
वह गलत नहीं था-
नागराज, नागरस्सी
द्वारा अपने शरीर को गुलेल में थमे पत्थर की तरह खींच रहा था-

और फिर, नागरस्सी को ढीला छोड़ते ही सींगों में पैदा तनाव भी खत्म हो गया-
और एक झटके से हवा में उड़ता नागराज का शरीर, सींगों की कैद से आजाद हो गया-
देख, गुरुदेव, देख! नागराज आजाद हो गया है! अब वह रक्तबीज को जिन्दगी की कैद से आजाद कर देगा! तू बस देखता जा! बगैर पलक झपकाए!
नहीं! नागराज मरेगा! उसके बचने का सिर्फ एक ही रास्ता है। और वह ये कि वेदाचार्य मुझे कालदूत का पता बता दे!
नागराज ने भौचक्के से खड़े रक्तबीज पर वार करने का मौका नहीं गंवाया-
उफ! ये विष फुंकार! मुझे मितली आ रही है!
धड़ाम
मैं तेरी मितली बाहर निकालने में तेरी मदद करता हूं, रक्तबीज!
ध्वंसक सर्पों के हमले ने रक्तबीज के पैर जमीन से उखाड़ दिए-

बड़ाऽऽऽसससमममम
ले गुरुदेव ! खत्म हो गया तेरा रक्तबीज ! नागराज ने इस 'बीज' को 'पौधा' बनने तक का मौका नहीं दिया।
खचच
कमाल कर दिया तुमने नागराज! इतने भयंकर दिखने वाले प्राणी को इतनी आसानी से खत्म कर दिया!
लेकिन तुम घटनास्थल पर देर से क्यों पहुंचे? किस चीज ने रोक रखा था तुमको?
वो... दरअसल लिझा, मुझे इसकी खबर ही तुमसे मिली।
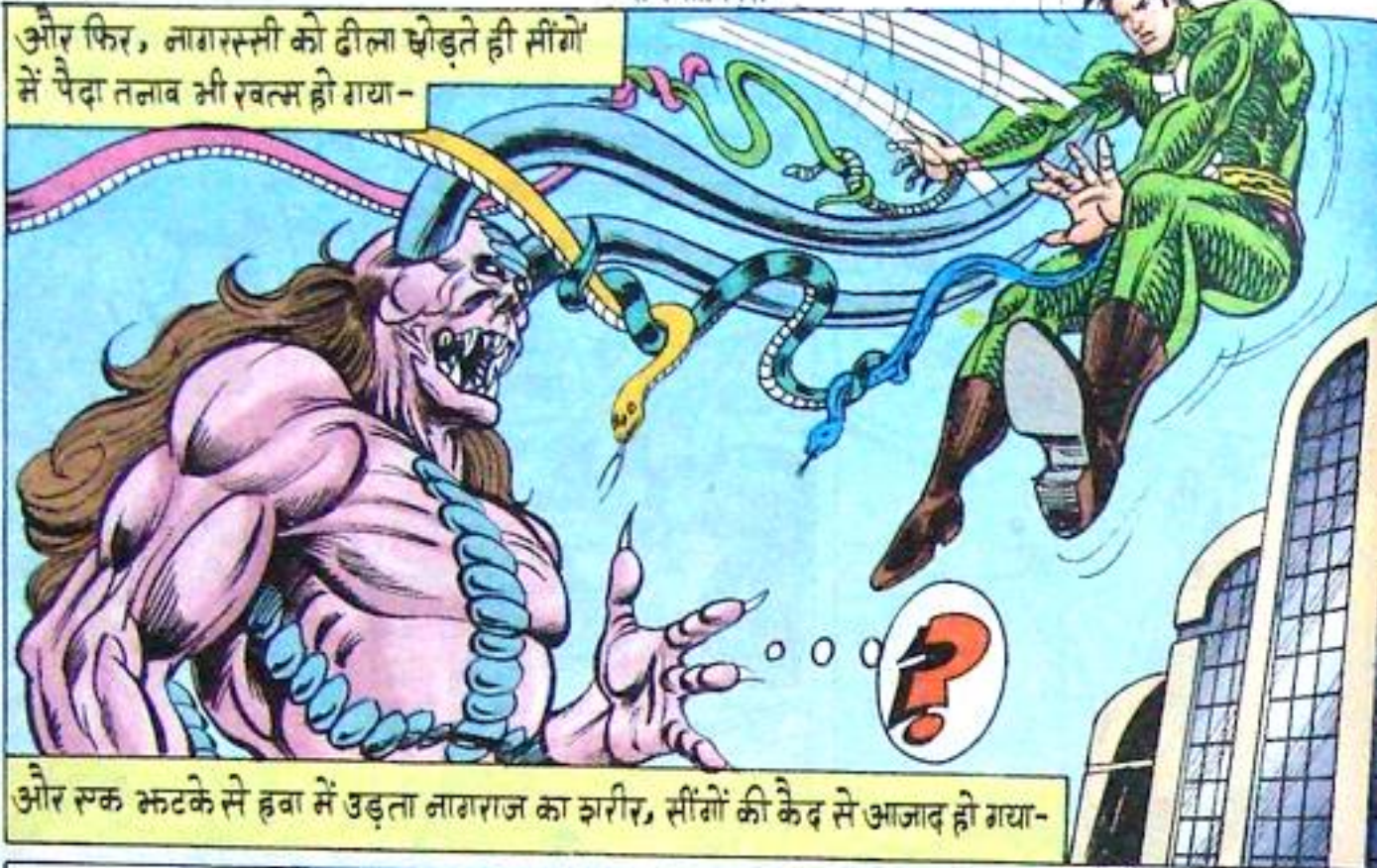
मुझसे ? मैंने तुमसे कब बात की ?
वो तुमने अभी फोन किया था न... ओ... राज को ! राज ने ही मुझे खबर दी !...
...कौन ?
रक्तबीज ! य... यह कैसे हो सकता है ! तुम्हारी लाश तो मेरे पैरों में पड़ी है !
नागराज ! इसके खून में कुछ खास बात है। इस खून से और भी रक्तबीज पैदा हो रहे हैं !
तू शायद धार्मिक ग्रंथ नहीं पढ़ता है नागराज ! वर्ना तू जान जाता कि हमको रक्तबीज कहते ही इसलिए हैं क्योंकि हमारे रक्त से ही कई सारे रक्तबीज पैदा हो जाते हैं !
मेरे लकड़दादा रक्तबीज के तो खून का संपर्क धरती से होने पर और रक्तबीज पैदा होते थे !
लेकिन मेरा रक्त तो हवा के संपर्क में आने से भी नए रक्तबीज पैदा कर देता है !
धड़ाक

मैंने पुराण पढ़े हैं रक्तबीज! और इसलिए मैं जानता हूं कि देवी काली ने रक्त चाट-चाट कर तेरे लकड़दादा का विनाश कर दिया था!
और यही काम मेरे सर्प करेंगे!
कोशिश करके देख ले नागराज! असफल रहेगा! क्योंकि हम रक्तबीजों के शरीर में इतना रक्त है कि उसकी नदी में तेरे सारे सर्प डूब मरेंगे! चाटना तो दूर की बात है!
हा हा हा! देखा, लड़की? यह है रक्तबीज की असली शक्ति! इसके रक्त से सिर्फ और रक्तबीज ही नहीं पैदा होते, बल्कि हथियार भी पैदा होते हैं! जिनसे ये नागराज की बोटी-बोटी काट देगा!

नागद्वीप में- जनता, महात्मा कालदूत की घोषणा से हतप्रभ रह गई थी-
नगीना! अब हमारी महारानी नगीना बनेगी? ये दुष्टा?
श श श! धीरे बोल! ये महात्मा कालदूत का निर्णय है। जो इसका विरोध करेगा, उसको महात्मा से टकराना होगा!
हम आपके निर्णय का विरोध तो नहीं करते हैं, महात्मन्, लेकिन अगर नगीना महारानी बनेगी तो. हम इस द्वीप पर नहीं रहेंगे।
हम भी नहीं रहेंगे!
हम भी नहीं!
हम सब जाएंगे!
खामोश मूर्खो! जब यहां पर कोई रहेगा ही नहीं तो नगीना क्या पत्थरों पर राज करेगी। अब तुम सब बगैर मेरी आज्ञा के कहीं नहीं जाओगे!
सबके शरीर में एक-एक अंकुश आकर धंसता चला गया, और पूरी प्रजा नगीना की गुलाम बनती चली गई -

इस संबंध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें : प्रलय और विषकन्या

ये... ये क्या हो रहा है? मैं अंकुश को धार करने का आदेश क्यों नहीं दे पा रही हूं?
क्योंकि तुझे द्वीप निकाला जरूर मिल चुका है नगीना! लेकिन फिर भी तू नागद्वीप वासी ही है! और इस नाते तू मेरी प्रजा भी है।...और राजदंड- धारक का आदेश मानने के लिए हर नाग-द्वीप वासी बाध्य है।
अब तू ये अंकुश मुझे दे दे नगीना!
अंकुश मेरे हाथों से फिसलता जा रहा है। नहीं, नहीं! ऐसा नहीं होगा! नागार्जुन! रोको विसर्पी को!
बाण, हवा में सनसना उठा-
टण
लेकिन राजदंड को पार करने का साहस न कर सका-
राजदंड की तंत्र शक्ति के सामने नागद्वीप वासी तो क्या, इस संसार का कोई भी प्राणी खड़ा नहीं हो सकता नगीना! छोड़ दे ये हठ और दे दे मुझे अंकुश!

वर्ना राजदंड ने नागार्जुन को तो सिर्फ सुलाया है। तुझे तो यह हमेशा के लिए सुला देगा!

तेरा राजदंड सभी पर असर करेगा विसर्पी! लेकिन उस पर नहीं, जिसने यह राजदंड बनाया है!... कालदूत ने!...

...कालदूत! खत्म कर दो विसर्पी को! इसके खत्म होते ही राजदंड अपने-आप मेरा ही जाएगा!

नहीं, महात्मा! आप वचन से बंधे हुए हैं! नागद्वीप के शासक की बात मानने के लिए आप बाध्य हैं, और इस वक्त मैं नागद्वीप की शासक हूं! रुक जाइए महात्मन्! वहीं रुक जाइए!

आssssह!

विसर्पी यह भूल रही थी कि वह पूर्ण शासक नहीं थी-

और इसीलिए कालदूत अपने वचन से बंधे हुए भी नहीं थे-

वैसे भी गरलगंट की अंकुश शक्ति राजदंड की शक्ति से कहीं ज्यादा ताकतवर थी-

तड़ाक

हा हा हा! गिर गया तेरा राजदंड! अब सब जाओ! टूट पड़ो इस पर! बोटी-बोटी कर दो इसकी!

चारों तरफ से गुलाम दुश्मन बढ़ते चले आ रहे थे! और भागने का कोई रास्ता नहीं था-

और नागद्वीप से दूर- महानगर में नागराज जिन्दगी और मौत के बीच में दूरी बनाए रखने की भरसक कोशिश कर रहा था-

काम बहुत टेढ़ा है! मुझे सारे रक्तबीजों को खत्म करना होगा! बगैर इनका एक भी बूंद खून बहाए! और यह काम मुझे अपनी जान रहते हुए पूरा करना होगा!

कम से कम मेरी सर्प शक्तियां इन पर बेअसर साबित नहीं हो रही हैं!

काम मुश्किल नहीं, असंभव था-

रक्तबीजों के पकड़ पाने से पहले ही नागराज स्विमिंग पूल में कूद चुका था-

इनका रक्त अगर पृथ्वी और हवा के संपर्क में आ जाए तो नए रक्तबीज पैदा होने लगते हैं! शायद रक्त के पानी के संपर्क में आने से ऐसा न होता हो!

रक्तबीजों ने भी नागराज के पीछे आने में समय व्यर्थ नहीं किया! और नागराज को वार करने का मौका मिल गया! लेकिन-

ओ! पानी में भी नए रक्तबीज पैदा हो रहे हैं!

मैं यहां पर भी इनकी गर्दनें नहीं काट सकता!

अब नागराज, चूहे की तरह स्विमिंग पूल के अंदर फंस गया था-

रक्तबीजों की फौज उसे सांस लेने तक के लिए सतह पर आने नहीं दे रही थी-

हा हा हा! अब अंत आ गया नागराज का! लेकिन नागराज को मैं वहां नहीं, यहां पर लाकर मारूंगा! तुम्हारी आंखों के सामने!

तब खुलेगी तुम्हारी जुबान!

गुरुदेव ने यंत्रों से कुछ छेड़छाड़ की-
और अगले ही पल-
नहींssss! ये नहीं हो सकता!
क्या हुआ भारती! बताओ, मुझे क्या हुआ है?
गुरुदेव ने रक्तबीज के साथ नागराज को भी यहां पर प्रेषित कर लिया है। और... और नागराज अचेत अवस्था में है!
अचेत अवस्था में है। अगर ऐसा है तो मुझे कुछ नजर क्यों नहीं आ रहा है! कहां है नागराज? कहां है?
मैं तुझे यह दृश्य देखने नहीं दूंगा वेदाचार्य! नागराज और तेरे बीच में फिलहाल एक तंत्र-दीवार है। तुझे तो मैं नागराज का सिर्फ एक हिस्सा दिखाऊंगा!
उसका कटा हुआ सिर!
नहीं!
तुम ऐसा नहीं करोगे!
तो फिर बता दे मुझे कालदूत का पता! त्रिफना का पता!

बता, वर्ना नागराज की गर्दन धड़ से अलग कर दूंगा!
बता दीजिए दादाजी! बता दीजिए! नागराज की जान के सामने किसी भी जानकारी की कीमत कुछ नहीं है! रुक जाओ गुरुदेव! रुक जाओ!
भारती की आंखों के जरिए ही सारा दृश्य देख रहे वेदाचार्य-
भारती की सलाह मानने को विवश हो उठे-
पहले वादा करो कि तुम नागराज को कोई हानि नहीं पहुंचाओगे!
फिर मैं तुमको कालदूत का पता बताऊंगा!
मुझे नागराज की जान नहीं, त्रिफना चाहिए। बख्शदी मैंने नागराज की जान! अब बता!
कालदूत तुमको नागद्वीप में मिलेगा! नागद्वीप 63 डिग्री अक्षांश और 9 डिग्री देशांतर पर स्थित एक गुप्तद्वीप है!
शाबाश! मैंने कहा था न केंदुकी कि रक्त बीज हारे या जीते, जीत हमारी ही होगी!
तु... तुमने नागराज को मार डाला!
कमीने...

काश ! मैं ऐसा कर पाता।
क्या मतलब?
मतलब ये कि यह नागराज और रक्तबीज नकली हैं। असली रक्तबीज और नागराज तो अभी भी लड़ ही रहे हैं। न जाने कौन जिन्दा बचेगा!
खैर! कोई भी बचे! मेरा काम तो हो गया! अपनी ही दुश्मन नगीना से सीखी चाल काम आ गई!
इसीलिए मैं नागराज की तरंगें ग्रहण नहीं कर पा रहा था! प्रतिरूप तरंगें छोड़ते ही नहीं!
तूने धोखा किया है गुरुदेव! इस धोखे की सजा तुझे जरूर मिलेगी!
सजा नहीं, इनाम मिलेगा वेदाचार्य! त्रिफना सर्प की मूर्ति के रूप में! और तुझे मिलेगी मौत!...
... केंदुकी के हाथों!
चलो नागपाशा! हमको जल्दी से जल्दी नागद्वीप पहुंचना है!
कालदूत से त्रिफना हासिल करना है!
और उसके बाद नगीना को ढूंढकर उससे मणियां हासिल करनी हैं!
आखिर तेरा अंत आ ही गया है बुड्ढे! मरने को तैयार हो जा! पहले तेरी पोती मरेगी, और फिर मरेगा तू!

नागराज अभी तक रक्तबीजों की फौज से ही जूझ रहा था-
मैं इनके चंगुल से इच्छाधारी कणों में बदलकर बड़े आराम से निकल सकता हूं। लेकिन मुझे ये काम तब तक नहीं करना है, जब तक आखिरी रक्तबीज भी इस स्वीमिंग पूल में नहीं आ जाता!
दम घुट रहा है! लेकिन मैं सतह पर सांस लेने के लिए नहीं जा पा रहा हूं!
ऊपर कोई रक्तबीज नजर नहीं आ रहा है। यानी सारे रक्तबीज अब मुझे घेरने के लिए स्वीमिंग पूल में कूद चुके हैं! अब सबसे पहला काम इनके चंगुल से छूटना है!
और यह काम मेरी विष फुंकार कर सकती है, जो पानी में घुलकर इनको कुछ पलों के लिए अचेत कर देगी!
और इन कुछ पलों में ही मैं...

...इच्छाधारी कणों में बदलकर, स्विमिंग पूल से बाहर निकल जाऊंगा!
और ऊपर से जा रहे इस हाइटेंशन केबल को तोड़कर...
...स्विमिंग पूल में डाल दूंगा!
पानी में दौड़ पड़ी तेज़ करेंट ने कुछ ही पलों में तड़पते रक्तबीजों के शरीर में दौड़ रहे खून को जमा दिया–
नागराज ने बगैर खून बहाए रक्तबीजों को नष्ट कर दिया था–

इनके मृत शरीर, फिर से एक होकर गायब हो रहे हैं। और मेरे सामने फिर से वही सवाल खड़ा हो गया है कि इसको किसने भेजा है। इस खामख्वाह की लड़ाई से किसको क्या फायदा हुआ है?

इस घटनाक्रम का एक अध्याय नागद्वीप में खेला जा रहा था-

विसर्पी को चारों तरफ से घेरा जा चुका था-

भागने या बचने के सारे रास्ते बन्द हैं! अब तो कोई चमत्कार ही मुझे बचा सकता है!

'चमत्कार' पास में ही मौजूद था-

नागद्वीप के राजतांत्रिक विषंधर के रूप में-

विसर्पी को कुछ नहीं होना चाहिए! क्योंकि सिर्फ विसर्पी ही ऐसी एकमात्र आशा है....

...जो नगीना को नागद्वीप हड़पने से रोक सकती है!

देखते ही देखते बवंडर विसर्पी को दूर उड़ा ले गया-
विसर्पी भाग नहीं सकती! उसको ढूंढो! नागद्वीप के चप्पे-चप्पे पर फैल जाओ! और देखते ही विसर्पी को खत्म कर दो! जाओ!
और तब तक मैं इस राजदंड की चाबी से खजाने का दरवाजा खोलती हूं!
अरे! मैं इस दंड को उठा क्यों नहीं पा रही हूं? यह दंड मुझे सम्राज्ञी क्यों नहीं मान रहा है?
नागद्वीप की प्रजा ने मुझे दिल से सम्राज्ञी नहीं माना है! मजबूरी वश माना है! मेरे तंत्र अंकुश की शक्ति के कारण! अभी तक राजदंड पर विसर्पी की इच्छाशक्ति हावी है! विसर्पी के मरने के बाद यह स्वतंत्र हो जाएगा! तब मैं इस पर अधिकार जमा सकूंगी!
यानी विसर्पी को मरना होगा! मरना होगा!
विसर्पी ने फिलहाल मौत को दूर टाल दिया था-
उस रहस्यमय बवंडर ने मुझे एक मौका दे दिया है। और उस मौके को मैं खोऊंगी नहीं। नगीना को अब सिर्फ एक शख्स रोक सकता है।...

...नागराज-
अगर नगीना खजाना ले गई है तो उसको ढूंढने में महात्मा कालदूत मेरी मदद कर सकते हैं। लेकिन मैं उनसे भी मानसिक संपर्क बनाने में विफल हो रहा हूं। सारे संपर्क सूत्र एक-एक करके कट रहे हैं!
लेकिन यह स्थिति हमेशा ऐसी ही नहीं रहेगी। कुछ न कुछ नया जरूर घटेगा! और वह भी जल्दी!
घटनाएं तो इस वक्त भी घट रही थीं-
विसर्पी नागराज की तरफ बढ़ रही थी-
और मौत भारती की तरफ-
रुक जा केंचुकी! मुझे अपनी जान लेने पर मजबूर न कर! अब मैं संभल गया हूं! शांति से हमें आजाद कर दे, वर्ना तू पछता भी नहीं सकेगा!
गीदड़ भभकी मत दे वेदाचार्य! अगर कुछ कर सकता है तो करके दिखा!...
...वर्ना चुपचाप अपनी पोती की जान निकलती हुई देख... आऽऽऽह!
ये...ये क्या हो रहा है?
कौन मार रहा है मुझे?

ओह! वही हो रहा है, जिसका मुझे हमेशा से डर था! जरूर केंदु की ने भारती पर ऐसा घातक वार किया होगा, जिससे उसके प्राण निकलने वाले ही होंगे। और ऐसा होने पर इसको आना ही था!

लेकिन मैं ऐसा कतई नहीं चाहता! चाहे प्राण चले जाएं, लेकिन इसकी मदद मैं कुबूल नहीं कर सकता!

रुक जाओ! रुक जाओ अग्रज! हमको तुम्हारी मदद की आवश्यकता नहीं है!

वेदाचार्य की चीख के जवाब में एक पारदर्शी आकृति हवा में उभरने लगी-

भारती को जो नुकसान पहुंचाएगा, वह नहीं बचेगा!

भारती मेरी जिम्मेदारी है। तुम्हारी नहीं! हमको तुम्हारी मदद की जरूरत नहीं है। चले जाओ! जाओ, अपनी दुनिया में वापस जाओ!

भारती को मैं बचाऊंगा!

ठीक है! मैं आपको एक मौका जरूर दूंगा! लेकिन असफल होने पर आप मुझको नहीं रोकेंगे! भारती के बचने तक मैं यहीं पर रहूंगा, अदृश्य रूप में!

केंदु की अपनी जान बचाने के चक्कर में कुछ भी समझ नहीं पाया था-
तूने मुझ पर कोई तिलिस्मी चाल चली है बुड्ढे! अब मैं तुझे दूसरा मौका नहीं दूंगा!
जिस दीवार पर तू बंधा है, उसको इतना गर्म कर दूंगा कि दीवार तेरी चिता बन जाएगी। और यही हाल तेरी पोती का भी होगा!
जल वेदाचार्य, जल!
तेरी हड्डियां गंदे नाले में बहा दूंगा!
दीवार का तापमान तेज़ी से बढ़ने लगा-
और उसी पल वेदाचार्य ने अपनी रुद्राक्ष की माला तोड़ दी-
हा हा हा! मैं तापमान इतना बढ़ा सकता हूं कि तू पलभर में भस्म हो जाए! लेकिन तुझे तो तड़प-तड़प कर मरना है!
तड़प-तड़प कर!
आऽऽऽह!
अब... ये... ये क्या मुसीबत आ गई?
धड़ाक
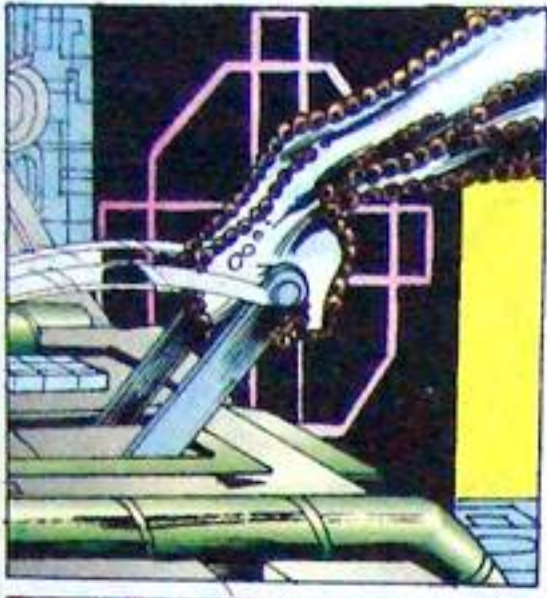
ये मेरा तिलिस्मी प्राणी है केंदु की! जिसको मैंने अपने पास रुद्राक्ष की माला के रूप में रखा हुआ था! इसका प्रयोग अब मैं दुबारा नहीं कर सकता!
लेकिन इसका दुबारा प्रयोग करने की जरूरत मुझे पड़ेगी भी नहीं। क्योंकि यह तेरा काम तमाम करने के लिए काफी है!
इस वक्त तू गुरुदेव की प्रयोगशाला में है वेदाचार्य। यहां पर ऐसे प्राणियों से निपटने का पूरा सामान मौजूद है!
यह ज्यादा देर तक मेरे सामने टिक नहीं पाएगा!

गलत! इसके सामने 'तू' ज्यादा देर तक नहीं टिक पाएगा, केंदुकी!
क्योंकि मैं इसको उस तरफ जाने ही नहीं दूंगा जिस तरफ इसको नष्ट कर सकने वाले यंत्र मौजूद हैं!
इसी दौरान नागद्वीप में-
विसर्पी की जिसने मदद की है, उसको तो मैं बाद में ढूंढकर दंड दूंगी!
फिलहाल तो देखूं कि विसर्पी इस वक्त कहां पर है!
मुंड की आंखों में एक दृश्य उभरने लगा-
नागद्वीप वासी उसे ढूंढ नहीं पाएंगे। ऐ मेरे तांत्रिक मुंड, दिखा मुझे कि विसर्पी इस वक्त कहां पर है? ढूंढ उसको!
और नगीना चौंक उठी-
विसर्पी, समुद्र में तैरकर महानगर की तरफ जा रही है! जरूर यह नागराज के पास जा रही है। उससे मदद लेने। और ... और नागराज भी गरलगंट के हाथों मरने से बच गया है!

अगर विसर्पी नागराज से मिल गई, और नागराज यहां पर आ गया तो कुछ भी हो सकता है? नागद्वीप का राज मेरे हाथ से जा सकता है!
एक ही हल है। विसर्पी को मरना होगा। उसके मरने के बाद राजदंड मेरे हाथ में आ जाएगा। और फिर नागराज मेरा कुछ नहीं बिगाड़ पाएगा। लेकिन नागराज के सामने विसर्पी को कौन मार सकता है? किसमें है इतना दम? किसमें?
हांऽऽऽऽ कालदूत! कालदूत के सामने नागराज टिक नहीं पाएगा!
कालदूत! महानगर जाओ, और विसर्पी को खत्म कर दो! और जो तुमको रोकने की कोशिश करे, उसको भी मार डालो!
जो आज्ञा, स्वामिनी!
विसर्पी नहीं बचेगी!
कालदूत जा रहा है। अब इससे पहले कि नगीना मुझे ढूंढ ले, मुझे नगीना को काबू में करना होगा! और उसका यही मौका... हैं?

तुम लोग तो मानव लगते हो! इच्छाधारी नाग तो हो नहीं! फिर इस निषिद्ध क्षेत्र में कैसे आ गए? जानते नहीं, इस द्वीप में किसी भी बाहरी व्यक्ति का प्रवेश वर्जित है!
तुम कौन हो? और कालदूत हमको कहाँ मिलेगा?
कमाल है! जवाब देने के बजाय सवाल कर रहा है! और वह भी राजतांत्रिक विषंधर से!
सबक देना पड़ेगा!...
...देना ही पड़ेगा!
देख! उड़ गए इसके चिथड़े!
अब इससे पहले कि तेरा भी यही हाल करूं बुड्ढे...
...मेरे सवाल का जवाब दे दे!
सवाल पहले मैंने किया है! जवाब पहले तुम दोगे!...

धड़ाााक
...और वह भी जल्दी! क्योंकि हो सकता है कि थोड़ी देर बाद तुम जवाब देने के काबिल ही न रहो!
आऽऽऽह! तु...तुम लोग कौन हो?
इ...इसके तो चिथड़े तक आपस में फिर से जुड़ जाते हैं! तुम मामूली लोग नहीं हो! कालदूत से टकराने की इच्छा रखने वाले मामूली नहीं हो सकते!... मु...मुझे माफी दे दो!
मैं सब बताऊंगा! पूछो, पूछो क्या पूछना है?
कालदूत कौन है? और वह हमको कहां मिलेगा? और नागद्वीप में इतनी हलचल क्यों है?
अगर तुम दो पल पहले आ जाते, तो कालदूत के दर्शन खुद ही कर लेते!
और रही हलचल की बात,
...तो नगीना ने सबको यहां की राजकुमारी विसर्पी की खोज में भेजा है! उसे ढूंढकर मार डालने के लिए!
नगीना यहां पर है? वाह!
लेकिन वह विसर्पी को मारना क्यों चाहती है?
विषंधर, राजा मणिराज की बरसी से सारा घटनाक्रम सुनाता चला गया-

ओह! यानी वह राजदंड ही नाग-द्वीप के खजाने की चाबी है। और उसको वही उठा सकता है, जो नाग-द्वीप का शासक होगा। ...फिर तो हमको राजदंड से काम है, कालदूत से नहीं!
लेकिन विसर्पी के मरने से तो नगीना शासक बन जाएगी। फिर हम क्या करेंगे?

हमको विसर्पी को बचाने महानगर जाना चाहिए!
मूर्खता पूर्ण बातें मत करो! विसर्पी बच गई तब तो वह शासक बनी ही रहेगी। हमको कोई और रास्ता ढूंढ़ना होगा। ऐसा रास्ता तलाश करना होगा जो नगीना और विसर्पी दोनों को मात दे दे!...

...जो हमको नागद्वीप का शासक बना दे!
और राजदंड को हमारे हाथों में सौंप दे!
ऐसा कोई रास्ता नहीं है! यह असंभव है। एकदम असंभव!

राजा मणिराज! हां! तुमने अभी बताया कि उसकी राख से भरा हुआ अस्थि-कलश अभी भी उसकी समाधि पर रखा हुआ है!
हां! लेकिन उससे क्या?

हमको तुरन्त वहां लेकर चलो! अब नागद्वीप के शासक हम बनेंगे!
चाहे विसर्पी जिन्दा बचे या नगीना, हमको कोई फर्क नहीं पड़ेगा!
लेकिन उससे मुझे क्या फायदा होगा?
हमारा ध्येय नागद्वीप पर नहीं, समय पर राज करना है!

अपना मकसद पूरा होने पर हम नागद्वीप का राज तुम्हे सौंप जाएंगे विषंधर!

कमाल है! मैं तो तुम दोनों का नाम भी अभी तक नहीं जानता! और तुम दोनों मुझे राजपाट सौंपे दे रहे हो! चलो! मैं तुमको दिखाता हूं मणिराज की समाधि!

और महानगर में–

मुझे यूं हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठना चाहिए! पूरे घर की छान-बीन करनी चाहिए!

शायद कहीं पर ऐसा कोई सुराग मिल जाए, जो मुझे भारती और वेदाचार्य का पता दे सके!

तभी-

अरे! घर के बाहर तैनात जासूस सर्प मानसिक संकेत भेज रहा है। कोई घर के अंदर घुसने की कोशिश कर रहा है!

लेकिन वह जो भी हो, उसका इस तिलिस्मी घर में घुसना तो दूर, अंदर कदम तक रख पाना मुश्किल है!

अरे! वह शख्स तो खिड़की तक पहुंच गया! असंभव! यह तो तभी हो सकता है, जब तिलिस्म घुसने वाले को 'अतिथि' के रूप में पहचान कर ले! ऐसा कौन हो सकता है जो इस घर में अतिथि रह चुका हो?

अभी देखता हूं!

इस संबंध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: फन

अगले ही पल- 'अतिथि' अपने-आप अंदर आ गिरा-
विसर्पी! तुम... तुम यहां पर कैसे? और तुम घायल कैसे हो गई? किसने किया है ऐसा दुस्साहस?
छोड़ दे इसे, और नागद्वीप की सम्राज्ञी नगीना के आदेशानुसार मुझे इसे मृत्युदंड देने दे!...
...वर्ना राजाज्ञा के उल्लंघन के आरोप में मैं तुझे भी मौत के घाट उतार दूंगा!
दुस्साहस तो तू करेगा नागराज! विसर्पी को बचाने की चेष्टा करके!
?
सम्राज्ञी नगीना? मृत्युदंड?
महात्मा कालदूत ये क्या कह रहे हैं विसर्पी?

और वहां से दूर-

तू केंदुकी की शक्ति को नहीं जानता वेदाचार्य! मेरे अंदर पचास हाथियों का बल है! तेरे 'रुद्राक्ष-प्राणी' को मेरा एक ही वार रुद्राक्ष के मनकों को बिखेर देगा!
धड़ाक

वेदाचार्य, रुद्राक्ष प्राणी को पूरी प्रयोगशाला में फैले 'तिलिस्म नाशक यंत्रों' के पास फटकने तक नहीं दे रहे थे-
ताााड़.
और इस कारण केंदुकी, 'रुद्राक्ष प्राणी' पर हावी नहीं हो पा रहा था-

रुद्राक्ष के सामने पचास तो क्या, सौ हाथियों का बल भी बेकार है केंदुकी! तू जितना प्रतिरोध करेगा, तुझे उतनी ही ज्यादा तकलीफ होगी!
तड़.तड़ तड़.तड़

लेकिन वेदाचार्य यह नहीं जानते थे-

कि कुछ यंत्र गुप्त तरीके से भी प्रयोगशाला में लगे हुए थे-
रोशनी की किरणें एक यंत्र का निर्माण करने लगीं-

'तिलिस्म नाशक यंत्र' की कैद में आते ही 'रुद्राक्ष प्राणी' के रुद्राक्ष बिखरने लगे-
ओह! रुद्राक्ष नष्ट हो रहा है! यह मेरी आखिरी उम्मीद है! अगर यह हार गया तो अग्राज फिर से आ धमकेगा! और यह मैं कतई नहीं चाहता!
क्या करूं? इस 'तिलिस्मी नाशक यंत्र' को नष्ट करने वाला तिलिस्म मैं बना सकता हूं। लेकिन उसको बनाने के लिए रेखाएं कैसे खींचूंगा? एक रास्ता है!... रास्ता है!
रेखाएं खींचेगा मेरा अंग वस्त्र! मेरा दुपट्टा!
दुपट्टा हाथ में आते ही-
वेदाचार्य ने उसे हवा में एक खास तरीके से घुमाकर फेंका-
और जमीन पर एक खास आकृति के आकार में गिरे दुपट्टे ने तिलिस्म नाशक यंत्र का असर नष्ट करना शुरू कर दिया-

और इससे पहले कि केंटुकी इस आश्चर्यजनक घटना से उबर पाता–
उस वार ने उसके होशो हवास छीन लिए–
तड़ाऽऽऽक्क्क
शाबाश! अब हमारे बंधन को तोड़कर हमको आजाद करो रुद्राक्ष! उसके बाद तुम्हारा काम खत्म हुआ। तुम दुबारा माला के रूप में आ सकते हो।
वेदाचार्य और भारती के बंधन तोड़कर रुद्राक्ष फिर से माला के रूप में परिवर्तित हो गया–
आऽऽऽह। क्या हुआ था दादाजी? हम आजाद कैसे हो गए?
बताता हूं भारती! अभी बताता हूं!
अग्रज, मैं जीत गया और तुम हार गए। अब दुबारा कभी सामने मत आना!
ये... अग्रज कौन है?
क... कोई नहीं, कोई नहीं।
अब हमको तुरन्त नागराज से संपर्क करना है। क्योंकि सिर्फ वही नागपाशा और गुरुदेव को त्रिफना पाने से रोक सकता है!
रहस्यमय अग्रज के बारे में हम भविष्य में कभी बात करेंगे। फिलहाल तो हमको पहुंचना है महानगर के उस हिस्से में–

जहां पर एक महायुद्ध छिड़ने वाला है-
...ओह! यानी यह सब नगीना की योजना है।... मरने तो तुमको मैं वैसे भी नहीं देता, विसर्पी! लेकिन यह जानने के बाद तो तुम्हारा जीवित रहना और भी आवश्यक हो गया है...
... चाहे मेरी जान चली जाए, परन्तु मैं महात्मा कालदूत को तुम्हारी आत्मा तक नहीं पहुंचने दूंगा!
मुझे अपनी नहीं, नागद्वीप की चिंता है नागराज!

अगर नगीना के हाथों में राजदंड आ गया, और महात्मा कालदूत भी उसके गुलाम बने रहे, तो वह सम्राज्ञी की शक्तियां पाकर पूरी दुनिया में उत्पात मचा देगी!
घबराओ मत विसर्पी! नगीना को महात्मा कालदूत ही रोकेंगे। और इनको रोकूंगा मैं ssss
अब न तो तू बचेगा, नागराज और न ही विसर्पी!
विसर्पी बचेगी महात्मा! मैं आपके सिर पर इसकी हत्या का पाप नहीं चढ़ने दूंगा!
नागराज की फुंकार से कालदूत तिलमिला उठे-

और नागराज को इस हरकत का नतीजा भुगतना पड़ा-
धच्च
ओह! अद्भुत है ये त्रिशूल! मेरा इच्छाधारी रूप भी इसके पार नहीं जा पा रहा है!
नागराज दीवार से जा चिपका -
अब पहले विसर्पी मरेगी नागराज, और फिर तू!
मुझे विसर्पी को बचाना होगा! लेकिन ऐसी कौन सी शक्ति है, जो महात्मा कालदूत के वारों को रोक सके!
हां! एक चीज है ऐसी। देवकालजयी द्वारा मुझे दिए गए विशेष नागफनी सर्प!
कुछ ही पलों के बाद, विसर्पी एक विशेष सुरक्षा कवच में थी-
ले!

ओह मर... यह... यह क्या? चीर चला, सर्प-जाल के पार नहीं जा पा रहा है! क्यों?... ओ SSS ह!
ये सर्प नागफनी सर्प हैं! देवकालजयी की शक्तियों से युक्त! इसीलिए ये मेरे चीर-चला को रोक पा रहे हैं!
अब विसर्पी के स्थान पर तू मरेगा, नागराज! तेरे मृत होते ही ये सर्पजाल भी टूट जाएगा। और तुझे मारना बहुत आसान है! क्योंकि इस वक्त तू मक्खी की तरह दीवार से चिपका हुआ है!
दीवार के जिस भाग से मैं चिपका हुआ हूं...
...वह ज्यादा देर तक बाकी दीवार के साथ नहीं रहेगा, महात्मन्!...
...अब मुझे मारना आसान नहीं है! नहीं है न, महात्मन्?
नहीं है, नागराज! परंतु तुझे विसर्पी को मुझे सौंपना ही पड़ेगा। वर्ना जिस दुनिया के लिए तूने नागद्वीप का सिंहासन त्यागा था, उसी दुनिया को मैं श्मशान बना दूंगा!

और इसके वासियों को मुर्दा !

मैं पूरे नगर के वातावरण को जहरीला बना दूंगा ! सारे मानव तड़प-तड़पकर मरेंगे ! अब इनकी जिन्दगी तेरे हाथों में है !... या विसर्पी की जान दे दे, या इस नगर के निवासियों की !

हिन्दुस्तान के बाकी नगरों की तरह महानगर का सीवर-सिस्टम भी ज्यादा बोझ सहने का आदी नहीं था-
पानी के भरने की गति ज्यादा थी, और निकलने की कम-
हा हा हा! अब विसर्पी को कैसे बचाएगा, नागराज?
देखते ही देखते पानी का स्तर खतरनाक सीमा तक पहुंच गया-
ओह! विसर्पी पानी में डूब सकती है!...
...उसे सर्पजाल से निकालना पड़ेगा!
विसर्पी को हम बचाएंगे...
आप!
हां, नागराज! हम आ गए हैं! विसर्पी को मैं तिलिस्म में सुरक्षित रखूंगा! तुम कालदूत को रोको!
आओ, दीदी! जरा संभलकर!
नागराज तुरंत डुबकी लगा गया-
सबसे पहले तो पानी को भरने से रोकना होगा! वर्ना कई जानें खतरे में पड़ जाएंगी!
मैं पानी का निकलना तो फिलहाल नहीं रोक सकता...
...लेकिन इसका रुख जरूर मोड़ सकता हूं!
सर्प मेला,
बाहर निकलकर एक मोटे पाइप का आकार लेने लगी-

इस सम्बन्ध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें : प्रलय

आऽऽऽह! यह मेरी गर्दन तोड़े दे रही है। इसके शिकंजे को जल्दी ही तोड़ना होगा!...
... शीतनागकुमार! बाहर आकर कालसर्पी पर 'शीत फुंकार' छोड़ो! जल्दी!
फ़ ी ऽ ऽ
कड़ ड़ क
मेरा ख्याल सही निकला! अत्यधिक कम ताप-मान में अधिकतर वस्तुएं नमक के ढेले की तरह भंगुर हो जाती हैं...
... यानी टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर जाती हैं!
त्रिशूल और कालसर्पी से बच गया! अब चीरचला का वार झेलकर दिखा!
आ ह!
चीरचला, नागराज को चीरता चला गया-

नागराज! महात्मा कालदूत के शरीर में धंसा हुआ अंकुश निकाल दो! फिर ये लड़ाई लड़ने की जरूरत नहीं पड़ेगी!
मैं यही करना चाहता हूं विसर्पी! लेकिन वह अंकुश कहीं नजर ही नहीं आ रहा है!
बिना दिखे उसको कैसे निकालूं?
मुझे तो यह भी नहीं पता कि अंकुश इनके शरीर के किस भाग में धंसा है! ओह! एक तरीका है! तरीका है, विसर्पी!
अगले ही पल नागराज एक तरफ लपक पड़ा-
भाग रहा है नागराज? भाग, भाग! तेरी अनुपस्थिति में मैं विसर्पी की जान आराम से निकाल सकूंगा!
यह काम आप वेदाचार्य को लाश में बदलने के बाद ही कर सकते हैं, महात्मन्!
वेदाचार्य और कालदूत में टकराव की नौबत नहीं आई-

इस संबंध में विस्तार से जानने के लिए पढ़ें: मृत्युदंड

त्रिफना

षड्यंत्र गहराता जा रहा है। और इस षड्यंत्र को रोक सकने वाला एकमात्र इंसान उस कालदूत से जूझ रहा है, जिससे मौत भी हार मान चुकी है। क्या करेगा नागपाशा? क्या करेगी नगीना? और क्या करेगा नागराज? इंतजार कीजिए त्रिफना का।